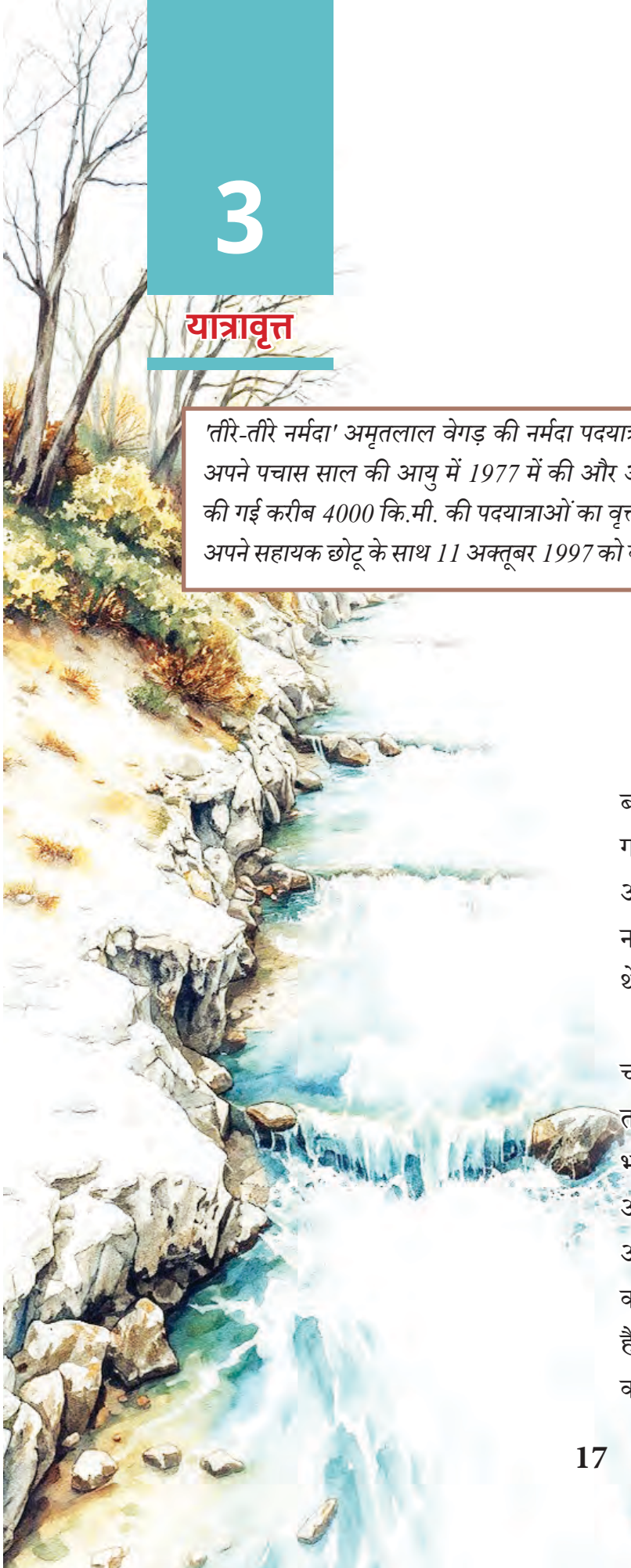

3

यात्रावृत्त

रैन बसेरे में...

अमृतलाल वेगड़

'तीरे-तीरे नर्मदा' अमृतलाल वेगड़ की नर्मदा पदयात्राओं का वृत्तांत है। प्रथम पदयात्रा उन्होंने अपने पचास साल की आयु में 1977 में की और अंतिम 2009 में। इन तैंतीस वर्षों के दौरान की गई करीब 4000 कि.मी. की पदयात्राओं का वृत्तांत है– 'तीरे-तीरे नर्मदा'। इस सिलसिले में अपने सहायक छोटू के साथ 11 अक्तूबर 1997 को की गई पदयात्रा के अनुभव यहाँ दिए गए हैं।

रात को थोड़ी देर के लिए मैं बाहर निकल आया और आकाश तले बैठ गया। तारे ऐसे लग रहे थे मानो किसीने आकाश में सफेद तिल बिखेर दिए हों। चाँद नहीं था इसलिए तारे खुलकर सामने आ गए थे।

सूरज चलता है अकेला, तारे चलते हैं जमात में। अमावस की रात को तारों का भंडारा भरता है। दिन का आकाश है हाउस ऑफ लॉर्ड, रात का आकाश है हाउस ऑफ कॉमन्स !

"दिन का आकाश है हाउस ऑफ लॉर्ड, रात का आकाश है हाउस ऑफ कॉमन्स!" –इससे आपने क्या समझा?

सुबह आगे बढ़े। पगडंडी एकाएक खतरनाक हो गई। ज़रा चूके और सीधे पानी में। पतली होते-होते वह लुप्त हो गई। खड़ी चढ़ाई चढ़कर मुश्किल से ऊपर आए। लेकिन ऊपर न गड़वाट थी, न पगडंडी और बादल थे कि हमें लगातार धमका रहे थे। वे सिमटकर घने काले मेघों में परिवर्तित हो रहे थे। कभी भी बरस सकते थे। कहीं एक आदमी तक नज़र नहीं आ रहा था। किसी तरह पथोड़ा पहुँचे। रोज़ की अपेक्षा आज हम आधा ही चल पाए थे, लेकिन पानी के डर से इसी गाँव में रुकना पड़ा।

कुछ लोगों ने मिलकर गाँव में एक मंदिर बनवाया है। अभी मूर्ति की स्थापना

नहीं हुई है। मंदिर के बरामदे में लोहे का जाली वाला दरवाज़ा है। मंदिर की देखरेख करने वाले ग्रामीण ने उसे हमारे लिए खोल दिया। आज यही बरामदा हमारा रैन बसेरा है। पानी लाने के लिए बाल्टी दी। फर्श पर बिछाने के लिए एक बहुत बड़ी दरी दी और सदाव्रत के लिए भी पूछा, लेकिन वह हमारे पास पर्याप्त था।

छोटू बाहर खाना बना रहा था। दाल तो बन गई थी पर वह गाकड़ बना रहा था कि पानी आ गया। प्रायः सभी खेतों में या तो सोयाबीन कट रहा है या कटे हुए सोयाबीन के ढेर लगे हैं। इस पानी से किसानों को भारी नुकसान हो रहा है।

"इस पानी से किसानों को भारी नुकसान हो रहा है।" –क्यों?

किसी तरह छोटू ने गाकड़ बना लिए। खाना खाकर, थोड़ा आराम करके जब सोने लगे, तब तक पानी बंद हो चुका था। बाहर बिजली का बल्ब जल रहा था।

रात को जब मैं उठा तो मेरे पैरों के पास की खाली दरी पर एक आदमी गुड़ीमुड़ी पड़ा था। उसने कुछ भी ओढ़ा नहीं था। लेटे-लेटे बड़बड़ा रहा था। मानो कहानी सुना रहा हो। फिर एकाएक ज़ोरों से हँसने लगता। बीच-बीच में रामायण की चौपाई बोलता। शायद पागल था। मैं चुपचाप सो गया।

थोड़ी देर के बाद वह उठकर बाहर चला गया। लेकिन जल्दी ही वापस आया। दरवाज़े पर खड़ा होकर गुर्राया, "कौन हो तुम लोग ? यहाँ कैसे घुस आए हो?" निरीह से दिखने वाले इस आदमी ने एकाएक विकराल रूप धारण कर लिया। अब वह बेहद गुस्से में था।

हमने कोई जवाब नहीं दिया। वह ज़ोर से चीखा। हम लोग उठ बैठे। मैंने कहा, "जिन्होंने यह मंदिर बनवाया है, उन्होंने हमें यहाँ ठहराया है। देखिए, यह दरी और यह बाल्टी भी उन्होंने ही दी हैं।"

लेकिन वह पागल जो था, ऊलजलूल बकने लगा। अपने आपको सी.आई.डी. इन्स्पेक्टर बताने लगा। "क्या समझते हो, मैं सादे भेष में रहकर चोरों का पता लगाता हूँ।" उसके सवाल बेसिर-पैर के थे। जवाब न देते तो चाबुक से मारने की धमकी देता। इसलिए मैं कोई न कोई जवाब देता रहा। वह लगातार चीखता-चिल्लाता रहा। बीच-बीच में हवा में ऐसे हाथ घुमाता, मानो हाथ में कोड़ा हो। जब उसकी नाराज़गी बढ़ जाती, तब उसका चेहरा क्रोध से विकृत हो उठता। मैंने अपने आपको कभी इतना असहाय अनुभव नहीं किया था। लाचार हम उसकी धौंस सहते रहे। पास-पड़ोस में कई घर थे। हमारी सहायता के लिए क्यों कोई आ

नहीं रहा? क्या कोई समझता नहीं कि हमारे साथ क्या हो रहा है? ऐसा लगता था मानो यह रात कभी खत्म ही नहीं होगी।

"ऐसा लगता था मानो यह रात कभी खत्म ही नहीं होगी।" –लेखक को क्यों ऐसा लगता था?

तभी उसका ध्यान कोने में रखे हमारे सामान की ओर गया। " इसमें क्या है? मुझे इसकी तलाशी लेनी होगी।"

मुझे चिंता हुई। उसमें सब्जी काटने का चाकू भी था। कहीं वह उसके हाथ लग गया तो ? मेरे भीतर भय की एक हिलोर-सी उठी।

उसने हमारा पिट्ठू खोला। एक-एक चीज़ निकालकर फेंकने लगा। मैं दम साधे उसकी हर गतिविधि को देखता रहा। डेटॉल की शीशी फर्श पर दे मारी। एक-एक चीज़ निकालकर फेंक दी। यहाँ तक कि चाकू भी फेंक दिया। अंत में दो-तीन किताबें निकालीं। किताबें उसने खोलकर देखीं, फिर ज्यों की त्यों वापस रख दीं। हमारी ओर मुड़कर छोटू से बोला, "बॉट इज युअर नेम?"

"किताबें उसने खोलकर देखीं, फिर ज्यों की त्यों वापस रख दीं।" –यहाँ अपरिचित व्यक्ति का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

छोटू ने सहमते हुए कहा, "मुझे अंग्रेज़ी नहीं आती।"

मुझसे पूछा, "तुम क्या करते हो?"

मैंने कहा, "मैं शिक्षक था, बच्चों को पढ़ाता था, अब रिटायर हो गया हूँ।" मेरी आवाज़ स्थिर थी लेकिन अंदर ही अंदर मैं डरा हुआ था। वह चुप रहा, मानो कहीं खो गया हो। मानो कुछ याद कर रहा हो। मानो उसके भीतर कुछ आलोड़ित हो रहा हो। कुछ क्षण तक मुझे एकटक देखते रहने के बाद बोला, "अच्छा, सो जाओ।" मैं सिर से लेकर पाँव तक ओढ़कर सो गया। सोचा शायद अब वह चला जाए।

तभी एक विचित्र घटना घटी। अचानक उसने मेरे पैर दबाने शुरू कर दिए। उसके मज़बूत हाथों का स्पर्श अनुभव करते ही मैं काँप-सा गया। एक-एक करके दोनों पैर खूब अच्छी तरह से दबाए। उसमें बड़ी ताकत थी। फिर हाथ दबाए। हाथों की एक-एक ऊँगली दबाई। हर घड़ी चिंता बनी रही कि कहीं कोई उँगली चटका न दे। इसके बाद उसने मेरी मुट्ठी खोली, उसमें कुछ रखा, मुट्ठी बंद की और चला गया। उसके जाते ही छोटू ने दरवाज़ा अंदर से बंद करके उसपर ताला लगा दिया। हमने राहत की साँस ली।

लेकिन नींद नहीं आई। मैं जागता पड़ा रहा और सोचता रहा कि उसमें एकाएक बदलाव क्यों कर आया। वह उद्दंड से विनम्र कैसे बन गया ?

मुट्ठी खोलकर देखा तो उसमें बीस पैसे का सिक्का था।

धीरे-धीरे गुत्थी सुलझने लगी। किताबों को उसने फेंका नहीं था। किताबें देखकर अनजाने ही उसके मन में यह बात आई होगी कि ये शायद लिखने-पढ़ने वाले आदमी हैं, शायद गुरु हैं। उस विक्षिप्त अवस्था में भी उसके अवचेतन में यह संस्कार दबा पड़ा था कि गुरु का तो आदर करना चाहिए। और यह मालूम होने पर कि मैं शिक्षक हूँ, उसका व्यवहार एकाएक बदल गया। उसकी विक्षिप्तावस्था पर उसके संस्कारों ने बढ़त पा ली थी।

"गुत्थी सुलझने लगी" –से आपने क्या समझा?

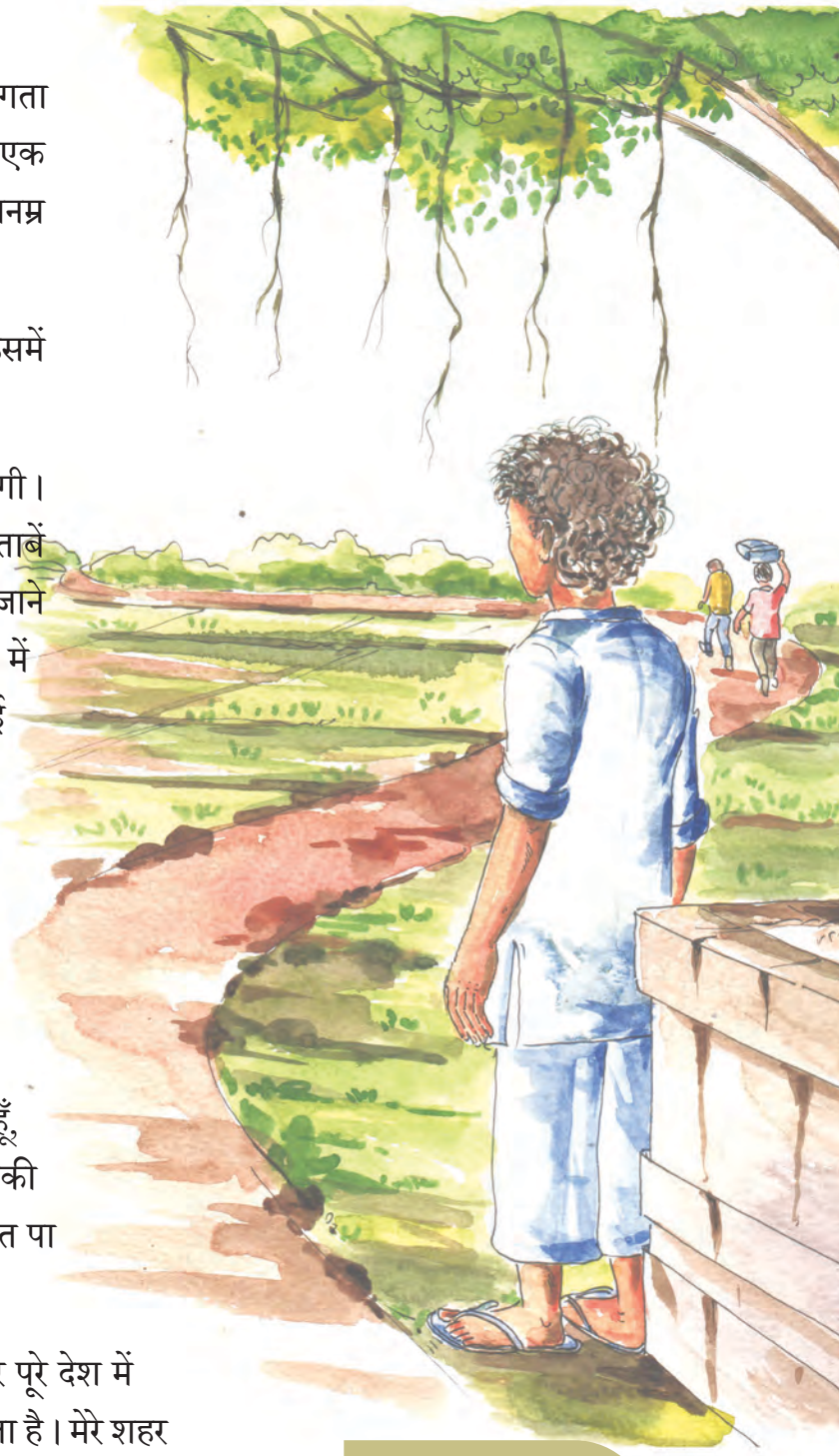

शिक्षक दिवस के अवसर पर पूरे देश में अनगिनत शिक्षकों का सम्मान किया जाता है। मेरे शहर में मेरा भी कई बार सम्मान हो चुका है। लेकिन उस रात को, भय और आतंक के साये में ही सही, मुझे जो सम्मान मिला, वह अपूर्व था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि एक शिक्षक के रूप में मेरा सर्वश्रेष्ठ सम्मान इस प्रकार होगा। इसके बाद मुझे कच्ची-सी नींद पड़ गई।

लेखक भय और आतंक की उस रात को मिला सम्मान अपूर्व मानते हैं। क्यों?

सबेरा हुआ। बिखरे सामान को फिर से पिट्ठू में जमाते हुए छोटू ने कहा, "उसने हमारी कानी कौड़ी तक नहीं ली।" दरवाज़ा खोलकर हम बाहर आए। पड़ोस के युवक से कहा, "रात को एक पागल ने हमें बहुत परेशान किया। घंटे-डेढ़ घंटे तक हमें डराता-धमकाता रहा। वह हमें पीट भी सकता था।"

"वे मेरे पिता हैं। पागलपन का दौरा पड़ता है, तभी ऐसी हरकतें करते हैं। पर किसीको मारते नहीं। वैसे वे यहाँ नहीं रहते, मंडीदीप में मेरे भाइयों के पास रहते हैं। कल रात को ही आए हैं।"

"हमारी मदद के लिए तुम आए क्यों नहीं?"

"मैं खेत पर सोया था। सोयाबीन कट रहा है। अभी आया हूँ। आपके यहाँ से आने के बाद वे चबूतरे चले गए। अभी वहीं हैं।"

हमारा रास्ता चबूतरे से होकर जाता था। हम वहाँ से निकले तो वह वहाँ खड़ा मिला। हमने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। तभी नीचे उतरकर, घुटनों के बल झुककर, उसने मेरे पाँव छुए। "गुरुदेव! बहुत शर्मिंदा हूँ। क्या करता, दौरा जो पड़ा था।" उसके चेहरे पर पछतावा था, आँखों में आँसू।

मैंने कहा, "भाई, तुम नहीं जानते कि तुमने गुरुओं का कितना मान बढ़ाया है– किसी एक गुरु का नहीं, तमाम गुरुओं का।"

इसके साथ ही हम आगे बढ़ लिए। और हाँ, वह सिक्का आज भी मेरे पास है।

गतिविधियाँ

» **सही प्रस्ताव चुनकर लिखें :**

» अमृतलाल वेगड़ ने नर्मदा के किनारे पदयात्रा की।

» बारिश होने से यात्रियों को पथोड़ा गाँव में ही रुकना पड़ा।

» लेखक और सहायक मंदिर की छत पर सो गए।

» छोटू ने गाँववालों के लिए खाना पकाया।

» नींद खुलते ही लेखक ने एक स्त्री को अपने पास बैठे देखा।

» पागल आदमी ने चाबुक से यात्रियों को मारा।

» पागल आदमी ने पिट्ठू से किताबें निकालकर फेंक दीं।

» पागल आदमी लेखक के पैर दबाता रहा।

» लेखक के हाथ में बीस पैसे का सिक्का रखकर पागल आदमी चला गया।

» पागल आदमी छोटू को भी साथ ले गया।

» **पात्रों की विशेषताएँ पहचानें :**

» इस यात्रावृत्त के प्रसंग में कौन-कौन आपके सामने आते हैं? उनकी विशेषताएँ क्या-क्या हैं? तालिका में लिखें।

पात्र	भूमिका	विशेषताएँ

» **अर्थ ढूँढ़ें :**

» यात्रावृत्त में इन मुहावरों का प्रयोग कहाँ हुआ है? वहाँ प्रत्येक मुहावरे का क्या अर्थ मिलता है?

- ऊलजलूल बकना
- बेसिर-पैर का सवाल करना
- धौंस सहना
- गुत्थी सुलझना

» **विशेषण शब्दों को पहचानें :**

» यात्रावृत्त में विशेषण शब्द युक्त वाक्यों का बहुत प्रयोग हुआ है। ऐसे वाक्य चुनकर लिखें और विशेषण शब्दों को रेखांकित करें।

जैसे :

- मुझे जो सम्मान मिला, वह **अपूर्व** था।
- तभी एक **विचित्र** घटना घटी।

» **बातचीत लिखें :**

» अपरिचित व्यक्ति के जाते ही छोटू ने दरवाज़ा बंद करके उसपर ताला लगा दिया। इस प्रसंग पर छोटू और लेखक के बीच की बातचीत लिखें।

» **मनपसंद प्रसंग यात्रावृत्त से चुनें। उस प्रसंग पर पटकथा का एक दृश्य लिखें और अभिनय करें।**

अनुबद्ध कार्य

» **अपनी किसी यात्रा का विवरण लिखें। कक्षा में सबके विवरणों को जोड़कर 'यात्रावृत्त संकलन' प्रकाशित करें।**

अमृतलाल वेगड़

जन्म : 3 अक्तूबर 1928
मृत्यु : 6 जुलाई 2018

अमृतलाल वेगड़ का जन्म मध्य प्रदेश में हुआ। उन्होंने 1948 से 1953 तक शांतिनिकेतन में कला का अध्ययन किया। वे नर्मदा-व्रती चित्रकार और लेखक हैं। मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति विभाग द्वारा राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान, केंद्र सरकार द्वारा महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान आदि से वे पुरस्कृत हैं। सौंदर्य की नदी नर्मदा, अमृतस्य नर्मदा, तीरे-तीरे नर्मदा आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

मदद लें :

तिल - എള്ള്, sesame seed, எள், ಎಳ್ಳು

बिखेरना - വിതറുക, to sprinkle, . சிதறுதல், ಅಪಾಯಕಾರಿ

जमात - दल

भंडारा - समूह

पगडंडी - ഒറ്റയടിപ്പാത, narrow pathway, ஒற்றை அடிப்பாதை, ಕಾಲುದಾರಿ

खतरनाक - അപകടകരം, Dangerous , ஆபத்தானது, ಅಪಾಯಕಾರಿ

चूक - गलती

पतला - നേർത്ത, thin, மெல்லிய, ಸಪೂರವಾದ

चढ़ाई - കയറ്റം, an upward slope, ஏற்றம், ಏರಿಕೆ

धमकाना - डराना

सिमटना - ഉരുണ്ടുകൂടുക, gather around,திரள்தல், ಸುರುಟಿಕೊಳ್ಳು

जाली वाला - അഴികളുള്ള, with rails, வலைத்தட்டி உள்ள, ಸರಳುಗಳಿರುವ

देखरेख - संरक्षण

रैन बसेरा - रात बिताने का स्थान

दरी - मोटे सूत का बिछावन

सदाव्रत - यात्रियों को बिना मूल्य ज़रूरी वस्तुएँ देने की व्यवस्था

गाकड़ - गेहूँ के आटे से बना खाद्य पदार्थ जो रोटी से थोड़ा छोटा होता है।

ओढ़ना - പുതയ്ക്കുക, to cover, மூடுதல், ಹೊದೆಯು

चौपाई - चौपाई छंद की पंक्तियाँ

निरीह - निर्दोष

बेहद - बहुत अधिक

ऊलजलूल बकना - बेकार की बातें कहना

चाबुक - ചാട്ടവാർ, whip, சாட்டை, ಚಾಟಿ

धमकी - ഭീഷണി, threat, அச்சுறுத்தல், ಬೆದರಿಸು

कोड़ा - चाबुक

नाराज़गी - क्रोध

लाचार - असहाय

धौंस - धमकी

तलाशी - പരിശോധന, search, பரிசோதனை, ಹುಡುಕಾಟ

चाकू - കത്തി, knife, கத்தி, ಚೂರಿ

पिट्टू - പെട്ടി, box, பெட்டி, ಪೆಟ್ಟಿಗೆ

दम साधना - साँस रोकना

आलोड़न - सोच-विचार

ताकत - शक्ति

चटकाना - तोड़ना

उद्दंड - उग्र, किसीका कहना न मानने वाला

सिक्का - നാണയം, coin, நாணயம், ನಾಣ್ಯ

गुत्थी - समस्या

विक्षिप्त - पागल

अवचेतन - ഉപബോധം, sub con scious, ஆழ்மனம், ಉಪಪ್ರಜ್ಞೆ

सम्मान - आदर

कानी कौड़ी - ചില്ലിക്കാശ്, pennies, துச்சமான பைசா, ಚಿಲ್ಲರೆ ಹಣ

शर्मिंदा - लज्जित

पछतावा - पश्चाताप

इकाई : दो

उम्मीद की दुनिया

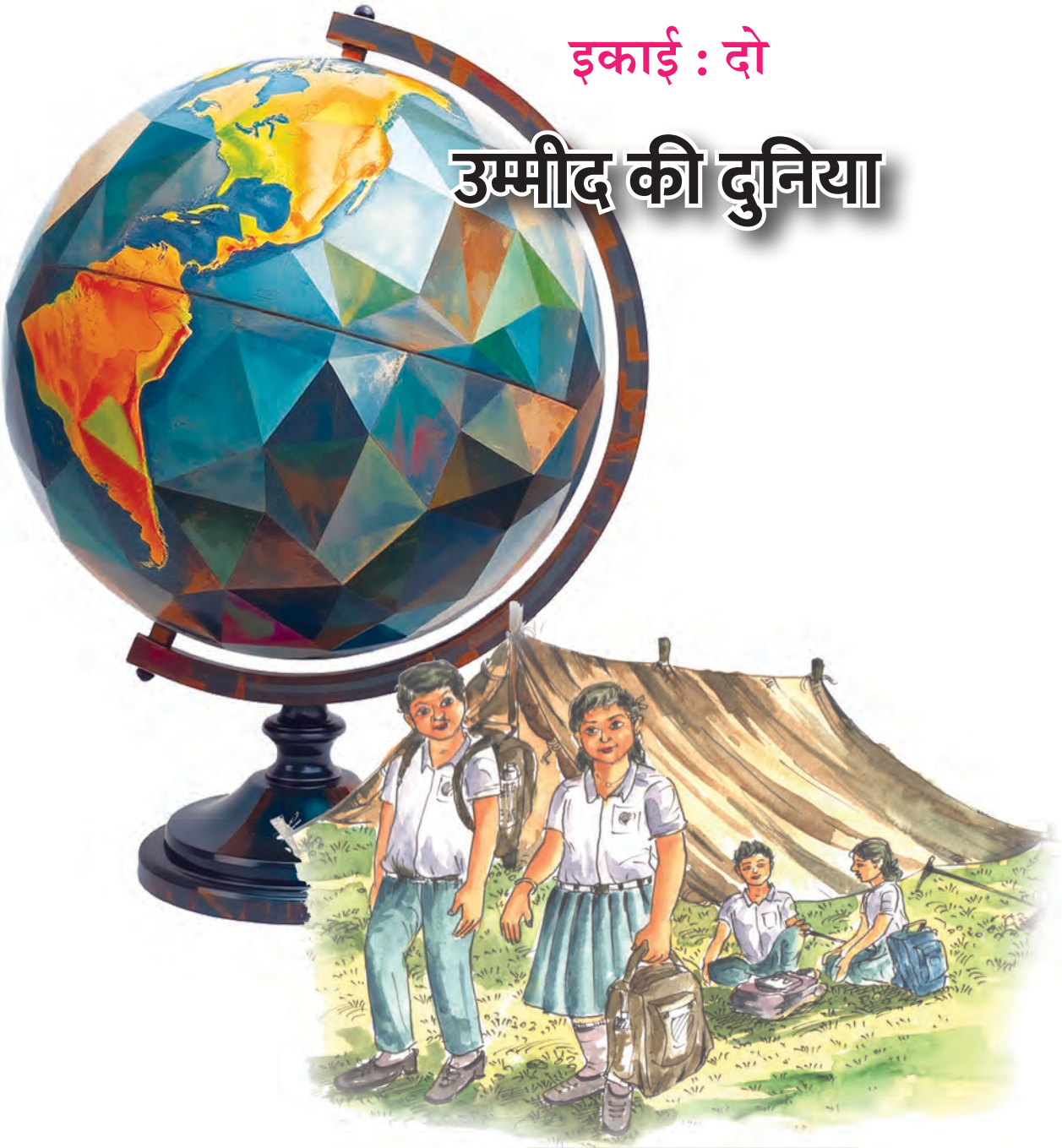

सपना रे सपना, है कोई अपना
अँखियों में आ भर जाऽ ना

-गुलज़ार

अपना देश आपको क्यों प्रिय है?

- अपने विचार कक्षा में साझा करें।